BA-III
मैथिली प्रतिष्ठा
पत्र - आठ
पुरुष-परीक्षा

प्रो० रंजीत कुमार राम
(अतिथि व्याख्याता (G/T))
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (LNMU)

युद्धवीरकथा (व्याख्यान - III)

दोसर दिन भेरीक शब्दसँ आकाशमण्डलकेँ व्याप्त कएने कमठक मर्म धरि स्पर्श करनिहार तापक प्रहारेँ भूमण्डलकेँ दलमलित कएने, महाराज जयचन्द्र हुनक नगरक निकट आबि पहुँचलाह। दोसर दिस कुमार कवच पहिरि अस्त्र सज्जित भऽ हाथीपर चढ़ि, आगाँ बढ़िक राजाक सामने अयलाह। काशीश्वर कहलनि तो के थिकह। सान्धि लेल आयल छह कि युद्ध लेल। कुमार बजलाह - हम युद्ध करब, सान्धिक हेतु नहि आयल छी। मल्लदेव के कहलनि - हमर प्रतिमल्ल तो ठीके भेलह। आब एखन आबि कऽ हमर अनुसरण करह मल्लदेव कहलनि - अहीं हमर अनुसरण किएक नहि करैत छी। मल्लदेव हुनका अपन तुलना देखौलनि - अहाँ घोड़ापर छी हम हाथीपर। अहूँ आन अछि आ हमरो। एखन शस्त्र प्रसारक अवसर अछि। वचन-विलासक नहि। राजा अपन सैनिक के कहलनि मल्लदेवक जीवित पकड़ि हमरा लग लऽ आबह।

मल्लदेव ललकारलक - हे आकाशचारी दिक्पाल मुनि एवं सिद्ध लोकनि! देवगण! राक्षसवृन्द! नरमांससँ तृप्त होइ जाउ। संग्राममे एहि प्रकारें मल्लदेव बहुतो (योद्धा) क संग महान् साहस देखा रहल छल।

तखन चारूदिससँ पकड़बालेल शत्रुदल योद्धालोकनिकेँ मल्लदेव नाराज बनाय गेल। सैनिक जवानकेँ धराशायी होइत देखि जयचन्द सेनाकेँ आदेश देल - हे वीरपुरुषगण चाहि स्वाही मरणोन्मुख अवरोध नहि क लक्ष्य तँ बाण- वृष्टिसँ एकरा डुबबइ। तखन सैनिक बाण चलौलनि आ कुमार मल्लदेव लाखोपरसँ अग्निपर खसि पड़लाह। खसल देखि राजा बजलाह - हे लब्ध- शालीक कुकुमणि! की अहाँ जीवि चाहै छी। मल्लदेव कहल - पहिने कहू, हमरा कहू गोटेमे युद्ध के जीतल। राजा - अहाँ। हमरा लोकनि बहुतो गोटेक संग अहाँ लड़ाई कयल आ आहत भेलहुँ ताहुपर अहाँ हमरालोककेँ जितबाक इच्छा राखैतहि छी, तखन अहाँ विजयी कोना नहि भेलहुँ। कुमार के जीवनाक इच्छा भेलनि। तुरत राजा उठा कऽ कुमारक शरीरसँ बाण बाहर कयल अपना ओतय ल' गेलाह। हुनक लालन-पालन कयलनि, घाव भरि

③

आपलाइ पर इच्छा विस्तार - नेमाराइ पूर्वक अपन प्रतिनिधि बनाओल ।

"मल्लईवक को बहादुरी तथा राजाक को ।विवेक ने कहियो अतीतकालमे भेल आछे ने भविष्यमे पुनः होयतन।

– समाप्त –

Samyut Kumar